DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-7,
AGGRESSION:SOCIAL-DETERMINANTS

LECTURE-30

SOCIAL-DETERMINANTS OF AGGRESSION

आक्रामकता के सामाजिक निर्धारक

सामाजिक कारणों में सभी कारकों को रखा जाता है जो अन्य व्यक्तियों के कुछ कहने या करने के कारण अर्थात दूसरों के साथ किये गए अंतक्रियाओं से आक्रामकता को उत्पन्न करता है|ऐसे कारको में निम्नांकित प्रमुख है –

(I) उत्तेजन का स्तर --- जब व्यक्ति में किसी घटना से साम्वेगिक उत्तेजन उच्चतर सीमा तक पहुँच जाता है ,तो उसमे आक्रामकता तो उत्पन्न होती ही है साथ-साथ बाद के असंबंधित परिस्थितियों में भी साम्वेगिक प्रतिक्रिया उत्पन्न कर के व्यक्ति को आक्रामक बना

देता है | इसे जिल्लमान (1988,1994) ने उत्तेजन – अंतरण सिद्धांत की संज्ञा दिया है | इस सिद्धांत के अनुसार विशेष परिस्थिति में बढ़ी हुई उत्तेजन का स्तर चाहे इसका स्रोत जो भी हो , कुंठा ,छेड़-छाड़ आदि होने पर व्यक्ति में आक्रामकता के स्तर को बढ़ा देता है |

(II) प्रत्यक्ष छेड़-छाड़ --- नवीनतम शोधो से यह पता चला है की अन्य व्यक्तियों द्वारा दैहिक शाब्दिक छेड़ – छाड़ से आक्रामकता व्यक्ति में तीव्रता से उत्पन्न होता है | अब प्रश्न उठता है की किस तरह का छेड़-छाड़ से आक्रामकता उत्पन्न होने की संभावना काफी अधिक होती है ? शोधो से निम्नांकित तथ्य सामने आये है –

1. हार्रिस(1999) के अध्ययन से यह पता चला है की जब एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति से अहंकारपूर्ण ढंग से व्यवहार करता है या उसका तिरस्कार करता है तो , इससे व्यक्ति में ऐसा करने वाले व्यक्ति के प्रति आक्रामकता उत्पन्न होती है |
2. बेरोंन (1993) के अनुसार वैसा तीखा एवं अनुचित आलोचना जिससे व्यक्ति पर सीधा प्रहार होता है , तो इसे

भी एक महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली छेड़-छाड़ माना जाता है और इससे भी व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न होती है |.

3. तीसरे तरह का छेड़-छाड़ जिससे व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न होता है ,वह है अपने परिवार विशेष कर माता-पिता भाई-बहन आदि के बारे में दिया गया अपमान जनक वक्तव्य या कथन होते है |ऐसे कथनों को सुनकर व्यक्ति अपना नियंत्रण खो देता है और आक्रामक व्यवहार प्रारंभ कर देता है |

(III) कुंठा ------ कुंठा- आक्रामकता प्राक्कल्पना जिसकी चर्चा आक्रामकता के प्रणोद सिद्धांत में की जा चुकी है , के अनुसार कुंठा आक्रामकता का एक सामान्य कारण है | यह प्राक्कल्पना जिसे डोलार्ड एवं उनके सहयोगियों (1939) ने प्रतिपादित किया था ,के मौलिक प्रारूप में दो बातें कही गयी थी |

1. कुंठा हमेशा किसी-न-किसी रूप में आक्रामकता उत्पन्न करता है , तथा
2. आक्रामकता हमेशा कुंठा से उत्पन्न होता है | जब व्यक्ति कुंठित होता है ,तो इससे हमेशा व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न होगा ही ,कोई जरुरी नहीं है | सचमुच में जब व्यक्ति कुंठित होता है ,तो उसमे कई तरह की प्रतिक्रियाएँ

जैसे उदासी ,विषाद आदि उत्पन्न होता है |इतना ही नहीं ,वह कुंठा के श्रोत को भी हटाने की कोशिश करने लगता है| इसका मतलब यह हुआ की कुंठा के प्रति तब आक्रामकता एवं स्वचालित अनुक्रिया नहीं होता है | नवीनतम शोध जिसे फोलगर एवं वेरोन (1996) ने किया है ,से यह पता चला है की कुंठा आक्रामकता का एक सफल कारण तभी बनता है जब व्यक्ति कुंठा को अनुचित एवं अवैध मानता है |

(IV) कुंठित करने वाला व्यवहार का उद्देश्य --- कुंठा आक्रामकता सिद्धांत से यह स्पष्ट हो गया है की आक्रामकता का एक सामान्य कारण कुंठा है |अध्ययनों से यह पता चला है की कुंठा व्यक्ति में आक्रामकता तभी उत्पन्न करता है जब कुंठा के श्रोत व्यवहार का उद्देश्य ही कुछ ऐसा होता है , परन्तु यदि उस श्रोत व्यवहार का उद्देश्य विदित होता है ,तो वैसी कुंठा से व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न नहीं होती है | जैसे अगर आपके जन्म दिन पार्टी में आपके सबसे मुख्य मेहमान यदि तीन घंटे देर से आते है और देर होने का कारण न बताकर यूँ ही कहकर रह जाते है तो उनके इस व्यवहार से आप में कुंठा अधिक

उत्पन्न होता है और आप में उनके प्रति आक्रामकता उत्पन्न होगी |परन्तु यदि मेहमान यह बतलाते है की उनके विलम्ब कारण उनके गाड़ी में खराबी थी ,तो उनके विलम्ब होने से आप में कुंठा की मात्रा भी कम हो जाती है तथा साथ-साथ आक्रामकता भी |

(V) प्रतिकार की उम्मीद ----- यदि व्यक्ति में प्रतिकार या बदला लेने का अभिप्रेरण होता है , तो इसमें आक्रामकता उत्पन्न होती है | प्रयोगात्मक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है की जब व्यक्ति समझता है की वह अपने ऊपर किये गए अत्याचार का बदला लेने में सक्षम है , तो ऐसे व्यक्ति लक्ष्य व्यक्ति के प्रति अधिक आक्रामक व्यवहार दिखलाते है |

(VI) प्रतियोगिता ---- इयुटश(1993) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है की जब परिस्थिति इस ढंग की होती है कि वहाँ व्यक्तियों में प्रतियोगिता अधिक होती है तो ऐसी हालत में आक्रामकता , तर्क-वितर्क तथा क्रोध का एक सिलसिला प्रारंभ हो जाता है परन्तु जब परिस्थिति ऐसी होती है जिसमे सहयोग एवं समर्थन अधिक होता है , तो उसमे ऐसा नहीं के बराबर होती है | एंडरसन तथा मोर्रो (1995) ने एक

अध्ययन किया जिसमे कुछ सहभागियों को एक अस्पष्ट आक्रामक परिस्थिति के बारे में प्रतियोगिता के ख्याल से सोचने के लिए कहा गया |जबकि कुछ सहयोगियों को वैसी ही परिस्थिति के बारे में प्रतियोगिता के ख्याल से सोचने के लिए कहा गया | इसके बाद इन सभी सहभागियों को वीडियो खेल खेलने के लिए कहा गया | परिणाम में पाया गया कि जिन सहभागियों को परिस्थिति के बारे में प्रतियोगिता के ख्याल से सोचने के लिए कहा गया था ,उनलोगों ने उन सहभागियों की तुलना में जिन्हें सहयोग एवं समर्थन के ख्याल से सोचने के लिए कहा गया था,अधिक विडियो पात्रो की हत्या किये |स्पष्टतः तब प्रतियोगिता की भावना से व्यक्ति में आक्रामकता व्यवहार की तीव्रता बढ़ जाता है |